

सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-3

“मेरे द्वारा टांगें चौड़ी करते ही ससुर जी ने मेरे गाउन को कमर तक ऊँचा किया और मेरी टांगों के बीच में बैठ कर टांगों और आसपास मरहम लगा दी। उसके बाद उन्होंने मेरी योनि के ऊपर सही तरीके से सैनिटरी पैड रखा. ...”

Story By: (tpl)

Posted: Thursday, August 2nd, 2018

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-3](#)

सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-3

लेखिका : दिव्या रत्नाकर

सम्पादिका एवं प्रेषक : तृष्णा लूथरा

मेरी हॉट स्टोरी के दूसरे भाग

सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-2

में आपने पढ़ा कि मेरी एक सहेली मुझे अपने प्रसव के समय क्या हुआ, बता रही है.

आप भी उसी के शब्दों में पढ़ें !

डॉक्टर के हटते ही ससुर जी मेरी टांगों के बीच में आ गए और मेरे गर्भाशय में से गर्भनाल को खींच कर योनि से बाहर निकाल कर अलग किया तथा गर्भाशय एवं योनि को अच्छे से साफ़ किया।

फिर उन्होंने उस स्थान पर जहाँ टक लगाया था वहाँ चार टाँके लगा कर सिल दिया तथा उन टाँकों को डॉक्टर को दिखा कर उनके निर्देश के अनुसार उन पर महरम लगाई और मेरी योनि पर एक सैनिटरी पैड बाँध दिया।

इतने में डॉक्टर मेरे शिशु मेरे पास लायी तथा मेरे ऊपर से चादर हटा कर रोते हुए शिशु को मेरे नग्न उरोजों के बीच में लिटाते हुए कहा- दिव्या, बहुत बहुत मुबारक हो, तुमने एक बहुत ही स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया है।

जब डॉक्टर ने रोते हुए शिशु को बिल्कुल साफ़ करके मुझे दिया था तब उसका शरीर बहुत ठंडा था इसलिए मेरी ममता ने उसे तुरंत अपने शरीर के साथ चिपका लिया।

माँ के शरीर और उसके वात्सल्य की गर्मी मिलते ही वह चुप हो गया और मेरे दोनों स्तनों के बीच में सिर रख कर पेट पर लेटते ही सोने लगा।

इसके बाद अगले आधे घंटे तक डॉक्टर और ससुर जी प्रसव का सभी सामान समेटते रहे

और सब निपट जाने के बाद उन दोनों ने मिल कर हम नग्न माँ बेटे को उठा कर बेडरूम में मेरे बिस्तर पर लिटा कर चादर से ढक दिया ।

घर जाने से पहले डॉक्टर ने मेरी बाजू पर एक इंजेक्शन लगाया और बोली- दिव्या, अब तुम अपने बेटे को अपनी छाती से लगा कर आराम से सो जाओ । जल्दी उठने की कोई आवश्यकता नहीं है मैं कल सुबह तुम दोनों देखने फिर आऊंगी ।

ससुर जी डॉक्टर को उसके घर तक छोड़ने के बाद क्लिनिक और केमिस्ट का समान एवं औषधि आदि वापिस रख कर मेरे कमरे में आये ।

आते ही उन्होंने अपनी जेब में से एक सोने की चेन, जिसमें हीरों जड़ित लोकेट डला हुआ था, को मेरे गले में डालते कर मेरे माथे को चूम कर कहा- बहू रानी, तुम्हें बहुत बधाई हो, सदा सुहागन रहो और खूब फलो फूलो । मुझे एक पोता एवं हमारे खानदान को एक वारिस देने के लिए मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ । तुम्हें अपने लिए जो भी चाहिए मांग लो, मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं वह वस्तु अवश्य ला कर दूंगा ।

इससे पहले कि मैं कुछ कहती ससुर जी ने कहा- सुबह के चार बजने को हैं और तुम बहुत थकी लग रही ही इसलिए अब तुम सो जाओ । नींद खुलने पर अगर तुम्हें कोई काम हो तो मुझे आवाज़ लगा देना ।

ससुर जी के अपने कमरे में जाते ही मैंने करवट ले कर बेटे को अपने सीने से लगा कर सोने की चेष्टा करने लगी ।

क्योंकि जिस समय से मेरा बेटा मेरे पास आया था तभी से मेरे शरीर की हर थकान एवं पीड़ा तथा तनाव एवं चिंता दूर हो गयी जिस कारण मुझे कुछ ही क्षणों में नींद आ गयी ।

सुबह छह बजे मेरे बेटे की आवाज़ ने मेरी नींद भंग करी तब मैंने उसे अपनी गोदी में लेकर उठने का सोच ही रही थी कि ससुर जी तेज़ी से कमरे में आये । मुझे बैठे देख कर वह बोले- ओह बहू, तुम क्यों उठ गयी ? मैं तो इसकी आवाज़ सुन कर इसीलिए भाग कर आया था

कि कहीं यह तुम्हें जगा नहीं दे। लाओ इसे मुझे दो और तुम सो जाओ।

अचानक ही उठ कर बैठने से मेरे वक्ष से चादर हट गयी थी तथा मेरे उरोज ससुर जी के समक्ष बेपरदा हो गए थे जिसे देखते ही मैंने तुरंत चादर से उन्हें ढांपते हुए कहा- डैडी जी, ऐसी कोई बात नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। इसे शायद भूख लगी होगी इसीलिए रोया होगा, मैं अभी इसे दूध पिला देती हूँ।

मेरी बात सुनते ही ससुर जी ने कहा- नहीं बहू, अभी इसे कुछ भी नहीं पिलाना है, तुम्हारा दूध भी नहीं पिलाना है। डॉक्टर ने बोला है कि चार घंटों के बाद ही इसे माँ का दूध पिलाना। अगर गला सूखने के कारण यह रोये या तंग करे तब इसके मुँह में उबले हुए पानी की कुछ बूँदें डाल देना। उसने यह भी कहा है कि लगभग चार घंटों के बाद ही जब तुम्हारे स्तनों में दूध भी उतर आयेगा तब तुम इसे पिला देना।

ससुर जी की बात सुन कर जब मैं चुप हो गयी तब वे अपने पोते को मेरी गोद से उठा कर अपने साथ ले गए और मैं यह देखने के लिए की मेरे स्तनों में दूध है या नहीं, उन्हें मसलने लगी।

स्तनों को मसलने के बाद जब मैंने अपनी चूचुक को दबाया, तब उसमें से गाढ़ा पदार्थ की सिर्फ एक बूँद निकली तथा दूध तो बिल्कुल नहीं निकला।

दूध की एक बूँद भी नहीं निकलने पर मैं हताश हो कर गाउन पहन कर बिस्तर पर लेट गयी और मुझे फिर से नींद आ गयी।

जब दोबारा बेटे के रोने के कारण मेरी नींद टूटी तब देखा नौ बज चुके थे और ससुर जी मेरे बिस्तर के पास मेरे रोते हुए बेटे को लेकर खड़े हुए थे।

मैं तुरंत उठी और उसे ससुर जी के हाथों से ले कर अपने सीने से लगाया और उनकी ओर देखा, तब वे वहाँ से चले गए।

ससुर जी के जाते ही मैंने गाउन के बटन खोल कर बेटे को स्तन के पास ले जा कर अपनी एक चूचुक उसके होंठों से लगाया लेकिन उसने ना ही मुंह खोला और ना ही उसे मुंह के अंदर लेने की कोशिश करी।

तभी नौकरानी कमरे के अंदर आई और बोली- बीबी जी, यह ऐसे नहीं पीएगा क्योंकि अभी इसे मुंह चलाना नहीं आता है। आप एक हाथ से इसका मुंह खोलें तथा दूसरे हाथ से अपनी चूचुक को पकड़ कर मुंह में डालिए और फिर उसे दबा कर कुछ बूँदें इसके मुंह में गिरने दीजिये। जब इसे दूध की बूँदें मिलेंगी तब उनको पीकर और दूध पाने के लिए यह मुंह चलायेगा। आज तो आपको ऐसे ही दूध पिलाना पड़ेगा लेकिन कल तक यह सीख जायेगा और फिर अपने आप पीने लगेगा।

मैंने नौकरानी के कहे अनुसार जब चूचुक को बेटे के मुंह में डाल कर दबाया तब उसमें से बहुत गाड़े दूध की दो बूँद उसके मुंह गिरी तब उसने झट से पी ली।

उसी प्रकार मैं बेटे को तब तक दूध पिलाती रही और जब वह दूध बाहर फेंकने लगा तब मैंने उसका मुंह पौँछ कर उसे अपने सीने से लगा कर लेट गयी।

लेटे लेते जब वह सो गया तब मैंने उसे अपनी बगल में लिटाया और नौकरानी को आवाज़ लगाई, जिसे सुनते ही ससुर जी तुरंत मेरे कमरे में आये।

उन्हें देखते ही मैंने कहा- डैडी, मैंने तो नौकरानी को आवाज़ लगाई थी आपने क्यों तकलीफ करी ?

मेरी बात सुन कर ससुर जी बोले- बहू, आंधी तूफान के कारण नौकरानी की झोंपड़ी की छत का एक हिस्सा उड़ गया है जिसे ठीक करने खातिर वह कुछ देर के लिए अपने घर गयी है। मुझे बताओ तुम्हें क्या काम है ?

मैंने कहा- नहीं डैडी, ऐसा तो कोई काम तो नहीं है। बाथरूम जाना था इसलिए आवाज़ लगाई थी।

ससुर जी ने तुरंत मेरे बिस्तर के पास आकर कहा- चलो, मैं तुम्हें बाथरूम तक पहुंचा देता

हूँ।

उसके बाद उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे उठाया और फिर मुझे सहारा देते हुए बाथरूम में पॉट तक पहुंचा कर अपने पोते के पास जाकर बैठ गए।

जब मैं नित्य कर्म से निपट कर सैनिटरी पैड बाँधने लगी तो उसे बुरी तरह खून से लथपथ देख कर ससुर जी को आवाज़ नहीं लगा कर खुद ही कमरे से लेने चली गयी।

मुझे कमरे में खुद ही आते देख कर ससुर जी ने उठ कर मुझे सहारा दिया तथा बिस्तर की ओर ले जाने लगे।

जब मैंने उनसे कहा कि मैं सैनिटरी पैड लेने आई थी तो वे बोले- अरे हाँ, मैं बताना भूल ही गया था कि नया पैड बाँधने से पहले तुम्हारे टांकों पर मरहम लगनी होगी। तुम बिस्तर पर लेटो और मैं रात की तरह उनपर मरहम लगा कर पैड बाँध देता हूँ।

मैंने तुरंत कहा- आप मरहम मुझे दे दीजिये मैं लगा कर पैड बाँध लूंगी।

ससुर जी झट से उत्तर दिया- पहली बात यह है कि तुम्हें आगे झुक कर पेट, नाभि तथा नीचे के क्षेत्र में जोर लगाना बिल्कुल मना है क्योंकि ऐसा करने से टाँके टूट सकते हैं। दूसरी बात यह है कि टाँके कहाँ लगे हैं, यह तुम्हें कैसे पता चलेगा और हाथ लगाने से उनमें सेप्टिक होने का खतरा है. मैं सही तरह से मरहम लगा कर उस पर पैड रख दूंगा तब तुम उसे अपने आप बाँध लेना।

अपनी नग्न योनि को ससुर जी के सामने करने के बारे में सोच कर मैं संकोच में पड़ गयी और अपनी टांगें भींच कर बिस्तर पर बैठ गयी।

लेकिन फिर रात में प्रसव के समय मेरी उसी नग्न योनि को उन्हीं के द्वारा बार छूने एवं फैलाने, गर्भनाल निकालने और टाँके लगाने के बारे में सोच कर मैंने उनके सामने टांगें चौड़ी कर दीं।

मेरे द्वारा टांगें चौड़ी करते ही ससुर जी ने मेरे गाउन को कमर तक ऊँचा किया और मेरी टांगों के बीच में बैठ कर टांकों और आसपास के क्षेत्र में मरहम लगा दी। उसके बाद उन्होंने मेरी योनि के ऊपर सही तरीके से सैनिटरी पैड रख कर कहा- मैं पैड को इसी जगह दबा कर रखता हूँ और तुम जैसे बाँधना चाहती ही इसे अपने हिसाब से बाँध लो।

जब ससुर जी मरहम लगा रहे थे, तब बेटा रोने लगा तब मैंने उसे गोद में उठा कर दूध पिलाते हुए ससुर जी से कहा- डैडी, अभी तो मैंने इसे दूध पिला रही हूँ, इसलिए रात की तरह आप ही ज़रा कस कर बाँध दीजिये।

दोपहर को लेडी डॉक्टर ने ससुर जी के सामने ही मेरी तथा मेरे बेटे की पूरी तरह से जांच करी और ससुर जी की तारीफ़ करते हुए कहा- डॉक्टर रत्नाकर, आपने दिव्या के प्रसव के समय बहुत ही अच्छे तरीके से मेरी सहायता करी थी। मुझे तो लगा ही नहीं कि आप पहली बार यह सब कर रहे थे। गर्भ नाल का बाहर निकालने और योनि की सफाई कर के नीचे के भाग में इतने बारीक टांके लगाने का काम बिल्कुल एक पेशेवर प्रसूतिशास्त्री की तरह किया है।

उसके बाद लेडी डॉक्टर ने मेरे और बेटे के लिए कुछ दवाइयाँ और इंजेक्शन लिख कर दिए और ससुर जी से योनि पर मरहम लगाते रहने के बारे में मुझे और ससुर जी को विस्तार से समझा दिया।

अगले दो दिन भी डॉक्टर इसी प्रकार मुझे और बेटे को देखने आती रही और दिन में जब भी मैं बाथरूम जाती तब मेरी योनि पर लगे टांकों पर ससुर जी मरहम लगा कर सैनिटरी पैड बाँध देते।

इस बीच बारिश के बंद हो जाने से दो दिनों में सड़कों पर से बाढ़ का पानी निकल गया तथा उनकी मरम्मत हो जाने से वाहन की आवाजाही भी शुरू हो गयी थी।

तीसरे दिन जब डॉक्टर आई तथा मेरी एवं बेटे की जांच करी और स्वास्थ्य में हो रही प्रगति से खुश होते हुए उसने कहा- दिव्या, मुझे मालूम है कि प्रसव के समय तुम्हें बहुत संकोच हो रहा था। लेकिन खराब मौसम तथा परिवहन अवरुद्ध होने के कारण हमारे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। मुझे तुम पर गर्व है कि ऐसे समय में तुमने ससुर जी को अपने शरीर के संवेदनशील क्षेत्रों को छूने पर कोई एतराज नहीं किया। मैं कुछ दिनों के लिए दूसरे कस्बों में जा रही हूँ इसलिए अगले तीन दिन भी तुम अपने ससुर जी से टांकों पर मरहम लगवाती रहना तथा उसके बाद उन्हीं से टांके भी कटवा लेना।

लेडी डॉक्टर के जाने के बाद मैंने उसके कहे अनुसार अधिकतर समय आराम ही करती थी लेकिन कभी कभी उठ कर घर में ही थोड़ा चलना फिरना तथा बिना झुके या नीचे बैठे हल्का काम भी करने लगी।

हर बार बाथरूम जाने तथा नहाने के बाद मुझे बेशर्मी से ससुर जी के सामने टांगें फैला कर अपनी योनि के नीचे भाग में लगे टांकों पर मरहम लगवा कर सैनिटरी पैड बंधवाना पड़ता था।

प्रसव के पाँच दिनों के बाद जब ससुर जी टांकों पर मरहम लगा रहे थे तब मैंने पूछा- डैडी, इन टांकों को सूखने में कितना समय और लगेगा और आप इन्हें कब काटेंगे ?

मेरे प्रश्न का उत्तर देने के बजाये उन्होंने अपना फ्रोन निकाल कर मेरी योनि और टांकों की चित्र खींचने लगे।

चित्र खींचने के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा- मैं अभी यह सभी चित्र लेडी डॉक्टर को भेज कर पूछ लेता हूँ कि टांके कब काटने हैं ?

उसके बाद वे मेरी योनि पर सैनिटरी पैड बाँध कर अपने कमरे में चले गए और मैं ससुर जी द्वारा मेरी योनि के चित्रों खींचने पर बहुत ही शर्मिंदगी महसूस कर रही थी।

उस शाम को चाय पीते समय ससुर जी ने बताया कि लेडी डॉक्टर ने कहा है कि टांके सूख

चुके हैं और इन्हें अगले दिन काट सकते हैं ।

अगले दिन सुबह सुबह जब मैंने ससुर जी से पूछा कि वे टाँके कब काटेंगे ?
तब उन्होंने कहा- दोपहर को जब भी तुम बाथरूम होकर आओगी, तब काट देंगे ।

कहानी जारी रहेगी.

trishnaluthra@gmail.com

कहानी का अगला भाग : सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-4

